International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 11 No. 6 July-Aug 2024

1857 की क्रान्ति में महिलाओं का योगदान–एक ऐतिहासिक विश्लेषण

डॉ. विमला मरावी
सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग,
शासकीय स्नाातकोत्तर महाविद्यालय उमरिया, जिला उमरिया, म.प्र. भारत।
Corresponding Author: डॉ. विमला मरावी
DOI- 10.5281/zenodo.13739099

सारांश:

प्रस्तुत शोध–पत्र में 1857 ई0 के विद्रोह में महिलाओं के योगदान के बारे में विवरण प्रस्तुत किया गया है। इस विद्रोह में महिलाओं ने न केवल पुरूषों के कंधे से कंधा मिलाकर आजादी की इस लड़ाई में हिस्सा लिया बल्कि जगह–जगह नेतृत्वकारी भूमिका और बेमिसाल कुर्बानियाँ भी दी। आमतौर पर नारी को अबला समझा जाता है। महिलाओं के बारें में इस तरह की सोच विश्वव्यापी है। भारत का पहला स्वतन्त्रता संग्राम सैकड़ों बहादुर महिलाओं के विद्रोह, कुर्बानी और प्राण न्यौछावर करने की दास्तानों को अपने में समेटे हुए है। इस संग्राम ने बार–बार इस बात को साबित किया कि अगर मौका दिया जाए तो औरतें जंग के मैदान में भी किसी भी पुरूषों से पीछे नही है। इस स्वतंत्रता संग्राम में केवल पुरूषों ही नायक नही थे, बल्कि अनगिनत महिलाओं ने अनेक स्थानों पर नेतृत्व भी प्रदान किया जैसेः– झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरत महल, मोती बाई, अंवतीबाई लोधी, बेगम जीनत महल, चौहान रानी, मैनावती, नर्तकी अजीजन, महारानी तपस्विनी, वीरांगना झलकारी बाई इत्यादि।

Keywords: रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरत महल, बेगम जीनत महल, चौहान रानी, मैनावती, नर्तकी अजीजन, महारानी तपवनी मोतीबाई, अवंतीबाई लोधी, वीरांगना झलकारी बाई।

प्रस्तावना:

प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में जिन वीरांगनाओं ने भारतमाता के मस्तक को गौरव से उचाँ किया, उनमें महारानी लक्ष्मीबाई का नाम सर्वोपरि है। वह झाँसी के राजा गंगाधर राव की मृत्यु के बाद झाँसी की रानी बनी। भारत में ईस्ट इडिंया कम्पनी के तानाशाही राज को चुनौती देने वाली किसी भी देसी रियासत की पहली शासिका थी। इन्होनें झाँसी की स्वतत्रता के साथ साथ पूरे देश को भी अंग्रेजों से आजाद कराने का सपना देखा और उसके लिए लड़ी। लक्ष्मीबाई किसी एक रियासत पर राज करने के लिए नहीं लड़ रही थी, बल्कि पूरे देश की आजादी चाहती थी। इस बात की जानकारी उनके उस पत्र से लगती है, जिसे उन्होने अपने समर्थक पड़ोसी राजा मर्दान सिंह को लिखा था। उन्होने लिखाः– बहुत से सहयोगियों और तांत्या टोपे से सलाह मशविरे के बाद हम इस नतीजे पर पहूँचे है कि सुराज अर्थात हमारा अपना शासन होना चाहिए। यह हमारा अपना देश हैं। गंगाधर राव की मृत्यु के बाद अंग्रेजों ने उनके दत्तक पुत्र दामोदर को उसका उत्तराधिकारी मानने से इन्कार कर दिया। लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों की इस राज्यलिप्सा का डटकर विरोध किया और गुप्त रूप से अपनी सैनिक तैयारी की। सभी जातियों के नौजवानों और नवयुवतियों को उन्होने सैनिक शिक्षा देने की कोशिश की। उसकी सेना में घुड़सवारों की प्रधान स्वयं रानी और तीन कर्नल सुंदर, मुंदर और काशी बाई थी तथा जासूस विभाग की प्रधान मोतीबाई और उनकी नायब जूही दोनो महिलाएं नियुक्त की गई थी। मार्च, 1858 को अग्रेंज कंमाडर ह्यूरोज ने झाँसी के किले को घेर लिया। रानी व उसकी सेना ने वीरता के साथ मुकाबला किया। मौर्चा पर डटे सिपाहियों के लिए भोजन, जल व्यवस्था, बारूद एवं गोले तैयार कराने, तोपों तक उन्हें पहूँचाने और खुद तोपें चलाने में महिलाएँ पुरूषों की मदद करती थी। कमांडर ह्यूरोज ने दुरबीन से स्त्रियों को भी गोला–बारूद चलाते देखा था।

झाँसी से रानी कालपी पहुँची और उसके पश्चात् ग्वालियर, परन्तु अंग्रेज निरन्तर उसका पिछा करते रहे। ग्वालियर में अंग्रेजों ने उस स्थान पर आक्रमण किया जहाँ पर रानी ठहरी हुई थी। लड़ते–2 रानी अंग्रेज सैनिकों से घिर गई। उसके शरीर का दाया भाग घायल हो गया। परन्तु वह इसकी चिंता छोडकर किले से बाहर निकली और अंग्रेजों ने उसका पीछा किया। उनके बचे हुए दो–तीन साथी उन्हें पास के बाबा गंगादास के आश्रम में ले गए, जहाँ उन्होंने अतिंम सांस ली। लक्ष्मीबाई की बहादुरी का लोहा फिरंगी भी मानते थे। अग्रेंजी सेना के मुख्य कमांडर ने रानी की बहादुरी के बारे में एक पत्र में लिखा– हालांकि वे एक महिला थी, लेकिन बहादुरी में जवाब नही और विद्रोहियों की सर्वोतम सैनिक नायिका थी। वह विद्रोहियों में एक पुरूष थी। वीरांगना झलकारी बाई झाँसी राज्य के एक बहादुर कृषक सदोवा सिंह की पुत्री थी। उनका जन्म 22 नवम्बर, 1830 को झाँसी के समीप भोजला नामक गाँव में हुआ था। उसकी माता का नाम जमुना देवी था। उसके पिता ने उसका पालन–पोषण पुत्र की भाँति किया। झलकारी के पिता ने डाकुओं के आंतक और उत्पात होते रहने के कारण उसे शस्त्र संचालन की शिक्षा दी थी, ताकि वह स्वंय अपनी सुरक्षा का प्रबन्ध कर सके। जब झाँसी का किला अंग्रेजी सेना ने घेर लिया और निरंतर तोपों से गोले बरसाकर स्थिति विकट बना दी, तब रानी ने किले के अन्दर युद्ध परिषद् की बैठक बुलाई। थोड़ी देर बाद ही प्रहरी ने आकर बताया कि महिला सैनिक झलकारी बाई अंदर आना चाहती है। रानी ने उसे तुरन्त बुला लिया।

झलकारी ने निवेदन करते हुए कहा–''बात यह है बाई साहब, कि हमारे सैनिकों की संख्या में निरन्तर कमी होती जा रही है। खाद्य सामग्री भी सीमित ही रह गई है। मेरे पति ने यह बताया कि हमारे तोपचियों में अनेक गद्दार

होने की आशंका है। वे लोग अग्रेंज सैनिकों को निशाना न बनाकर खाली स्थानों पर गोले दाग रहे है। स्थिती कभी भी गंभीर बन सकती है। हमें किले को तुरन्त छोड़ देना चाहिए। झलकारी बाई ने रानी से कहा कि मैं भी आपका वेश धारण करूंगी ताकि अंग्रेज सिपाही धोखे में पड़ जाए और इस प्रकार से रानी किले से निकल गई। शत्रु ने झलकारी को रानी समझकर उसे घेरने का प्रयत्न किया। शत्रु सेना से घिरी झलकारी भंयकर युद्ध करने लगी। एक भेदिए ने उसे पहचान लिया और उसने भेद खोलने का प्रयत्न किया, परन्तु झलकारी ने उसे अपनी गोली का शिकार बनाया। अंग्रेज सेनापति ह्यूरोज ने झलकारी को डपटते हुए कहा कि – ''तुमने रानी बनकर हमको धोखा दिया है और महारानी लक्ष्मीबाई को यहाँ से निकलने में मदद की है। तुमने हमारे एक सैनिक की भी जान ली है। मै भी तुम्हारे प्राण लूगाँ।

झलकारी ने गर्व से उत्तर देते हुए कहा– ''मार दे गोली, मै प्रस्तुत हूँ।'' जनरल ह्यूरोज ने झलकारी को एक तम्बु में कैद कर लिया और उसके बाहर पहरा लगा दिया। उचित अवसर पाकर झलकारी रात में चुपके से भाग निकली। जनरल ह्यूरोज ने प्रातः होते ही किले पर भयंकर आक्रमण कर दिया। अंग्रेज तोपची का गोला झलकारी के पास वाले तोपची को लगा। वह तोपची झलकारी का पति पूरन सिंह था। झलकारी ने तुरन्त तोप–संचालन का कार्य सभांल लिया और वह शत्रु सेना को विचलित करने लगी। शत्रु सेना ने भी अपनी सारी शक्ति उसके उपर लगा दी। इसी समय एक गोला झलकारी को भी लगा और 'जय भवानी' कहती हुई वह भी भूमि पर अपने पति के शव के समीप ही गिर पड़ी। वह अपना काम कर चुकी थी। महारानी तपस्विनी झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की भतीजी एवं उनके एक सरदार पेशवा नारायणराव की पुत्री थी। वह एक बाल–विधवा थी। उसके बचपन का नाम सुनन्दा था। नारायणराव की मृत्यु के बाद सुनन्दा उनकी जागीर की देखभाल करने लगी। वह लोगो को सरकार के विरूद्ध भड़काती थी। अतः अंग्रेजी सरकार ने उन्हे कुछ समय के लिए बन्दी रखकर रिहा कर दिया।

जेल से रिहा होने के बाद सुनन्दा ने सन्यास ग्रहण कर लिया और वह तपस्विनी के नाम से प्रसिद्ध हो गई परन्तु वह अपने प्रवचनो के माध्यम से जनता को क्रान्ति के लिए प्रेरित करती रहती थी। 1857 की क्रान्ति में उसने सक्रीय रूप से भाग लिया। क्रान्ति के दमन के बाद वह नाना साहब के साथ नेपाल चली गई और कुछ समय बाद वह कलकता आ गई। 1907 ई0 में कलकता में ही उनका देहांत हो गया। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में जन साधारण का प्रतिनिधित्व करने वाली महिला अजीजन ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अजीजन बेगम अपने समय की एक प्रसिद्ध नर्तकी थी। 10 मई, 1857 को जब मेरठ में क्रान्ति की ज्वाला प्रज्जवलि हुई तो कानपुर में भी नाना साहब ने अनेक गुप्त बैठकें आयोजित करनी शुरू कर दी। 1 जुन 1857 को आयोजित एक गुप्त बैठक में नाना साहब, बाला साहिब, अजीमुल्ला खाँ के अतिरिक्त कुछ अन्य देशभक्तों ने भी भाग लिया जिसमें अजीजन बेगम भी थी। 8 कानपुर में विद्रोह के आरम्भ होते ही अजीजन ने वीर, साहसी व निर्भिक महिलाओं की एक टुकडी तैयार की जो घायल सैनिकों की सेवा, युद्ध में भाग लेने वाले सैनिकों को भोजन तथा आवश्यकता पड़ने पर रणभूमि में भी जाती थी। जुन 1857 को कानपुर पर नाना साहिब का अधिकार हो गया, परन्तु शीघ्र ही 16 जुलाई , 1857 को अग्रेंजो ने पुनः कानपुर पर अधिकार कर लिया तो अनेक विद्रोहियों को गिरफ्तार कर लिया जिनमे अजीजन भी थी। अग्रेंज जनरल हैवलाक ने अजीजन के समक्ष प्रस्ताव रखा कि यदि वह अपने कार्य के लिए पश्चाताप करे तथा क्षमा–प्रार्थना करें, तो उसे मुक्त कर दिया जाएगा– परन्तु वीरांगना अजीजन ने हैवलाक के इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। उन्होने स्पष्ट कहा कि वे अग्रेंजों का विनाश चाहती है। अन्तः में हैवलाक ने उन्हे मृत्यु दण्ड दिया और अग्रेंज सैनिकों ने उन्हे अपनी गोलियों का निशाना बनाया। इस प्रकार से अजीजन अपने देश के लिए शहीद हो गई। रानी अवंतीबाई लोधी ने भी 1857 के विद्रोह में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई परन्तु हमारा देश काफी हद तक उसके कार्यो से अनभिज्ञ रहा है। वे मध्यप्रदेश में रामगढ रियासत की शासिका थी।

1857 की क्रान्ति की नायिका ने अग्रेंजों को जितनी लड़ाईयों में पराजित किया, उस तरह के उदाहरण कम ही मिलते है। जुलाई 1857 में अवंतीबाई ने स्वंय घोड़े पर सवार होकर अपनी सेना का नेतृत्व किया और सुहागपुर पर कब्जा कर लिया। अगला युद्ध शाहपुरा के पास हुआ। यहाँ भी अग्रेंजों को शर्मनाक हार का सामना करना पड़ा। यहाँ पर भी काफी अग्रेंज सैनिक मारे गए। यह युद्ध इतना भयंकर था कि अग्रेंज कंमाडर कैप्टन वाशिंगटन को इस प्रकार से मोर्चा छोड़कर भागना पड़ा कि वह अपने काफी छोटे बच्चे को भी अपने साथ नही ले जा सके। रानी अवंतीबाई लोधी ने इस बच्चे को सुरक्षित उसके पिता के पास पहूँचा दिया। अप्रैल 1858 में जब पहाड़ी क्षेत्र देवहारगढ में रानी और उसकी सेना अग्रेंजों से मोर्चा ले रहे थे तो एक पड़ोसी राजा की गद्दारी की वजह से उसकी सेना पर पीछे से आक्रमण बोला गया। रानी ने अग्रेंजों से हार मानने या समर्पण करने की बजाए अपनी ही तलवार से अपनी जान ले कर देश की आजादी के आंदोलन में अपनी महान भागीदारी दर्ज करा दी। अवध की बेगम हजरत महल ने भी 1857 के विद्रोह में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होनें अपने अल्पवयस्क पुत्र बिरजिस कादर की सरंक्षिका बनकर अवध में विद्रोहियों का नेतृत्व किया क्योंकि अग्रेंजों ने कुशासन का आरोप लगाकर अवध को 1856 में ब्रिटिश साम्राज्य में शामिल कर लिया था। बेगम ने अग्रेंजों के खिलाफ एक मोर्चा बनाकर अवध के क्षेत्र में गोरे शासकों को जबरदस्त चुनौती प्रस्तुत की। लखनऊ पर अग्रेंजी सेना के हमले के खिलाफ उन्होने अपने सहयोगियों के साथ जबरदस्त मोर्चा लिया। इस मोर्चे पर इंकलाबियों ने बहादुरी के जो कारनामे अंजाम दिए, वे लोककथाओं और गीतों का विषय बने। दुर्भाग्य से लखनऊ के मोर्चे पर उनकी हार हुई, क्योंकि अग्रेंजों के समर्थन में गोंरखो और दलाल राजाओं की विशाल सेनाएँ युद्ध में शामिल हो गई।

लखनऊ छोड़कर उन्होने शाहजहाँपुर पर हमले का नेतृत्व किया, लेकिन पुवायां के राजा की गद्दारी की वजह से वहाँ भी जीत हासिल न हो सकी। इस बहादुर रानी ने हथियार डालने की वजह नाना साहब के साथ मिलकर नेपाल के तराई क्षेत्र में भारत की आजादी का परचम थामे रखा और लड़ती रही। समकालीन अग्रेंज पत्रकार रसल ने उनकी प्रशंसा में लिखा था कि – बेगम महान शक्ति और काबलियत रखती थी। महिला होने के बावजूद मानसिक तौर पर वे बहुत प्रबुद्ध और समझदार थी और पुरूषों का नेतृत्व करने की भरपूर क्षमता रखती थी। कुमारी मैना नाना साहब की दत्तक पुत्री थी। उसमें राष्ट्रीयता की भावना कूट–2 भरी हुई थी। 1857 की क्रान्ति के दौरान अग्रेंजों ने मैना को बन्दी बना लिया। उन्होने मैना

को डराः धमका कर नाना साहब का गुप्त रहस्य जानने का प्रयास किया परन्तु उन्होने कुछ भी नही बताया।'' अतः अग्रेंजों ने मैना को जलती हुई अग्नि में फेंक दिया। जिसमें झुलसकर वह मर गयी। अनूपनगर के राजा प्रताप चण्डीसिंह की पी चौहान रानी के नाम से प्रसिद्ध थी। चण्डीसिंह की मृत्यु के बाद रानी ने शासन प्रबन्ध अपने हाथों में ले लिया। लार्ड डलहौजी ने अनूपनगर का राज्य भी कम्पनी के साम्राज्य में मिला लिया, जिससे रानी अग्रेंजों की कट्टर दुश्मन बन गई। 1857 ई0 की क्रान्ति के समय रानी ने अपने खोये हुए राज्य पर पुनः अधिकार कर लिया।

उसने कई अग्रेंज सैनिकों को मार दिया और उनके राजकोष को भी लूट लिया। रानी ने 15 महिनो तक अनूपनगर पर शासन किया। क्रान्ति को कुचलने के बाद अग्रेंजो ने अनुपनगर को पुनः अग्रेंजी साम्राज्य में मिला लिया। बाद में अग्रेंजो ने चौहान रानी के साथ बहुत बुरा व्यवहार किया। इस पर रानी अनूपनगर से चली गई। बेगम जीनत महल का प्रथम भारतीय स्वतत्रंता संग्राम में महत्वपूर्ण योगदान माना जाता है। यधपि बेगम जीनत महल ने झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की भाँति शस्त्र धारण करके युद्ध भूमि में भाग लेकर अग्रेंजो को तलवार के घाट नही उतारा था। बेगम में अपूर्ण साहस और सुझ–बूझ की असाधारण क्षमता विधमान थी। बेगम जीनत महल ने ही मुगल सम्राट बहादुरशाह जफर को अत्याचारी अग्रेंजी शासन के विरूद्ध युद्ध का संचालन एवं उसका नेतृत्व करने के लिए प्रेरित किया था। 10 मई, 1857 को मेरठ में विद्रोह होने के बाद अनेक विद्रोही सैनिकों ने दिल्ली की और प्रस्थान किया। उन्होने मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर से निवेदन किया कि, ''जहाँपनाह हम ब्रिटिश शासन को समाप्त करना चाहते है।''

उन्होने बादशाह से आर्शीवाद देने और नेतृत्व करने की प्रार्थना की। परन्तु बादशाह ने उनकी प्रार्थना की और बिल्कूल ध्यान नही दिया, क्योंकि विश्वासघाती दरबारी नहीं चाहते थे कि युद्ध के संचालन का नेतृत्व मुगल सम्राट करें। बेगम जीनत महल पर्दे के पीछे से सैनिकों की बातें सुन रही थी। जब उसने बहादुर शाह जफर का नकारात्मक रूख देखा तो वह काफी दुःखी हुई। बेगम ने बादशाह से कहा, ''राजन्! यह समय गजलें कहकर दिल बहलाने का नहीं है। बिठूर (कानपूर) से नाना साहब का सन्देश लेकर बहुत से बहादुर सिपाही आए है। आज सारे भारतवर्ष की आँखे दिल्ली की और आप पर लगी है। आपका कर्तत्य है कि आप इनका साथ दे, अन्यथा इतिहास आपको कभी भी माफ नही करेगा।''

निष्कर्षः

ये बातें सुनकर बुठला दिया कि 'महिलाएँ सिर्फ घर की चार दिवारी के अन्दर ही रह सकती है, 'सौन्दर्य की वस्तु है,' 'उनमें नेतृत्व की क्षमता का अभाव होता है।' महिलाओं ने इस क्रान्ति में न सिर्फ भाग लिया, बल्कि अपने शौर्य से तत्कालीन ब्रिटिश शासकों को आश्चर्यचकित कर दिया। महिलाओं ने यह दिखा दिया कि अगर कोई भी उनके स्वाभिमान और अधिकार को चुनौती देगा तो वे मरते दम तक उसका डटकर मुकाबला करेंगी। 21वीं शताब्दी में भारतीय समाज को इन महिलाओं से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है, तभी हम विश्व–परिदृश्य पर अपनी सशक्त उपस्थिती दर्ज करा पाएँगें।

सन्दर्भ सूचिः

1. इस्लाम, शम्सुल, 1857 की हैरत अंगेज दास्तानें प्रकाशक–वाणी प्रकाशन, 4695,21–ए, दरियागंज, नई दिल्ली–110002 संस्करण – 2010 पृष्ठ सं0 –77
2. सिंह, नमिता, सिंह कुँवरपाल 1857 और जनप्रतिरोध प्रकाशक–शिल्पायन, 10295, लेन नं0 1, वैष्ट गोरखपार्क शाहदरा, दिल्ली–110032 संस्करण – 2015 पृष्ठ–सं0 188
3. वहीं, पृष्ठ सं0 189
4. इस्लाम, शम्सुल, 1857 की हैरत अंगेज दास्तानें प्रकाशक –वाणी प्रकाशन, 4695,21–ए, दरियागंज, नई दिल्ली–110002 संस्करण – 2010 पृष्ठ सं0–78
5. शिशिर कर्मेन्दु 1857 की राजक्रान्ति विचार और विश्लेषण प्रकाशक–अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्युट्री (प्रा0) लि अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली–110002 संस्करण–2008, पृष्ठ सं0–117
6. नागेरी, एस. एल. कान्ता 1857 की क्रान्ति एवं उसके क्रान्तिकारी प्रकाशक–इंडियन पब्लिशिंग हाऊस 852 – महाबीर नगर, टोंक रोड़ जयपुर संस्करण–2015, पृष्ठ सं0– 159
7. वहीं, पृष्ठ सं0 155
8. सिंह नमिता, सिंह कुँवरपाल 1857 और जनप्रतिरोध प्रकाशक–शिल्पायन, 10295, लेन नं0 1, वैष्ट गोरखपार्क शाहदरा, दिल्ली–110032 संस्करण–2015 पृष्ठ–सं0 192
9. इस्लाम, शम्सुल, 1857 की हैरत अंगेज दास्तानें प्रकाशक–वाणी प्रकाशन, 4695,21–ए, दरियागंज, नई दिल्ली–110002 संस्करण–2010 पृष्ठ सं0–79
10. वहीं, पृष्ठ सं0 80
11. नागेरी, एस. एल. कान्ता 1857 की क्रान्ति एवं उसके क्रान्तिकारी प्रकाशक–इंडियन पब्लिशिंग हाऊस 852 –महाबीर नगर, टोंक रोड़ जयपुर संस्करण–2015, पृष्ठ सं0– 138।